मिले किनारे

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

मिले किनारे ◆ रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ◆ डॉ. हरदीप कौर सन्धु

काम्बोज जी से व्यक्तिगत परिचय बरेली आने पर आज से 24 वर्ष पूर्व हुआ। इनकी रचनाओं से मैं पहले से ही परिचित था। लघुकथा, कविता, व्यंग्य, समीक्षा, लेख आदि सभी में इनकी पकड़ सदा समाज की नब्ज़ पर रही है। सामाजिक सरोकार कभी भी इनकी रचनाओं से ओझल नहीं हुए।

हाइकु 1986 से लिख रहे थे, लेकिन उस समय जिस तरह की रचनाएँ आ रही थीं, ये उनसे सन्तुष्ट नहीं थे। 'मिले किनारे' संग्रह के ताँका और चोका रचनाओं में भी इनके वही सामाजिक सरोकार, वही अनुभूति की ईमानदारी, वही बेबाक अभिव्यक्ति दिखाई देती है, जो इनके जीवन का भी अटूट हिस्सा रही है। मैंने इनको शिक्षक एवं प्राचार्य के रूप में भी निकटता से देखा है। ये जीवन और साहित्य में एक ही जैसी क्षमता से कार्य करते नज़र आते हैं। इनके चाहे ताँका हों या चोका, वे व्यक्ति और समाज के दुख-सुख के साक्षी ही नहीं, भागीदार बने दिखाई देते हैं। पर-दुखकातरता की इनकी विशेषता एक ओर इनकी भावभूमि है तो भाषा पर मज़बूत पकड़, सार्थक शब्द-चयन में इनकी परिपक्वता और क्षमता भाषा-संस्कार के रूप में हर पंक्ति में दृष्टिगत होती है। पाठक इनकी रचनाओं को पढ़कर इन्हें जान सकता है- इसमें दो राय नहीं हैं।

- सुकेश साहनी

ISBN : 978-81-7408-503-0

मिले किनारे

(ताँका और चोका संग्रह)

मिले किनारे

(ताँका और चोका-संग्रह)

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 160.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2011 © रचनाकार

MILE KINARE (Tanka and Choka) by Rameshwar Kmboj 'Himanshu'
and Dr. Hardeep Kaur Sandhu

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

पुरोवाक्

साहित्यकार अगर लकीर का फ़क़ीर रहा होता तो ताँका से हाइकु उद्‌भूत न हुआ होता। जापान की ये विधाएँ दरबारी परम्परा का ही चक्कर लगाती रहतीं। स्वानुभूति कविता का प्राण है। कवि की ईमानदारी अपने अनुभवजन्य संसार के प्रति ज़्यादा होती है। शिल्प का निरन्तर विकास विधा को निखारता है। डॉ. सुधा गुप्ता जी ने सन् 2000 में ताँका लिखना शुरू किया था। इनके 56 ताँका 'बाबुना जो आएगी' (2004) में तथा 61 ताँका 'कोरी माटी के दिये' (2009)में छपे। जनवरी 2009 में डॉ. उर्मिला अग्रवाल का ताँका संग्रह 'अश्रु नहायी हँसी' (96 ताँका) तथा 2010 में 'यायावर मन' (108 ताँका) प्रकाशित हुआ। इसके बाद 2011 में डॉ. सुधा गुप्ता का ताँका संग्रह 'सात छेद वाली मैं' आया है। इसमें इनके 153 ताँका संगृहीत हैं। इस क्षेत्र में ये तीनों संग्रह उल्लेखनीय ही नहीं, पठनीय भी हैं। 2011 में ही मनोज सोनकर का संग्रह 'ताँका-तरंग (444 ताँका) और रेखा रोहतगी का ताँका और हाइकु का संयुक्त संग्रह 'अथ से इति' आए। 'अथ से इति' में रोहतगी जी के 92 भावप्रवण, लयात्मक ताँका नई आशा जगाते हैं।

'ओक भर किरनें' डॉ. सुधा गुप्ता जी का और हिन्दी का (मेरी अब तक की जानकारी के अनुसार) प्रथम चोका-संग्रह है।

हम दोनों ने हिन्दी हाइकु के माध्यम से विश्व भर के रचनाकारों को ताँका से जोड़ने का प्रयास किया है; जिनमें रचना श्रीवास्तव, डॉ. जेन्नी शबनम, सुभाष नीरव, मंजु मिश्रा, डॉ. अमिता कौण्डल, प्रियंका गुप्ता, कमला निखुर्पा, ऋता शेखर 'मधु' आदि ने प्रभावशाली ताँका की रचना की है।

ताँका जापानी काव्य की कई सौ साल पुरानी काव्य शैली है। इस शैली को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के दौरान काफी प्रसिद्धि मिली। उस

समय इसके विषय धार्मिक या दरबारी हुआ करते थे। हाइकु का उद्‌भव इसी से हुआ। इसकी संरचना 5+7+5+7+7=31 वर्णों की होती है। एक कवि प्रथम 5+7+5=17 भाग की रचना करता था तो दूसरा कवि दूसरे भाग 7+7 की पूर्त्ति के साथ शृंखला को पूरी करता था। फिर पूर्ववत् 7+7 को आधार बनाकर अगली शृंखला में 5+7+5 यह क्रम चलता; फिर इसके आधार पर अगली शृंखला 7+7 की रचना होती थी। इस काव्य शृंखला को रेंगा कहा जाता था। इस प्रकार की शृंखला सूत्रबद्धता के कारण यह संख्या 100 तक भी पहुँच जाती थी। ताँका पाँच पंक्तियों और 5+7+5+7+7 = 31 वर्णों के लघु कलेवर में भावों को गुम्फित करना सतत अभ्यास और सजग शब्द साधना से ही सम्भव है। इसमें यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि इसकी पहली तीन पंक्तियाँ कोई स्वतन्त्र हाइकु है। इसका अर्थ पहली से पाँचवीं पंक्ति तक व्याप्त होता है।

चोका (लम्बी कविता) पहली से तेरहवीं शताब्दी में जापानी काव्य विधा में महाकाव्य की कथाकथन शैली रही है। मूलत: चोका गाए जाते रहे हैं। चोका का वाचन उच्च स्वर में किया जाता रहा है। यह प्राय: वर्णनात्मक रहा है। इसको एक ही कवि रचता है। इसका नियम इस प्रकार है –

5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7 और अन्त में + (एक ताँका जोड़ दीजिए) या यों समझ लीजिए कि समापन करते समय इस क्रम के अन्त में 7 वर्ण की एक और पंक्ति जोड़ दीजिए। इस अन्त में जोड़े जाने वाले ताँका से पहले कविता की लम्बाई की सीमा नहीं है। इस कविता में मन के पूरे भाव आ सकते हैं। इनका कुल पंक्तियों का योग सदा विषम संख्या यानी 25-27-29-31 इत्यादि ही होगा।

एन्साइक्लोपीडिअ ब्रिटॅनिका में चोका के बारे में बताया है-

'Choka', A form of waka (Japanese court poetry of the 6th to 14th century) consisting of Alternating lines of fiveAnd seven syllables And ending withAn **extra** line of seven syllables-The total length of the poem is indefinite.'

विषय के अनुरूप काव्यरूप का चयन सबसे प्रमुख है। कुछ लोग काव्यरूप को ही साध्य मानकर उसके शिल्प या बनावट को ही सब कुछ मान बैठते हैं। जो कुछ भी सूझा, सब उसी में भरने या ठूँसने की कोशिश करते हैं।

बनावट से आगे बढ़कर बुनावट पर ध्यान देना ज़रूरी है। कविता का कथ्य अपना स्वरूप आप तलाश लेता है। जो रचनाकार भाव, विचार, संवेदना आदि को किनारे करके 'बस कुछ न कुछ लिखना है' के दबाव से पीड़ित रहते हैं, वे लिख तो लेते हैं पर रच नहीं पाते। सबसे संक्षिप्त चोका 5-7 5-7 5-7 5-7-7 वर्णों का है जिसे नारा काल में यामान्यू ओकुरा ने रचा। इसकी रचना एक ही कवि द्वारा की जाती है। इसी शृंखला में हमारा ताँका और चोका संग्रह 'मिले किनारे' आप सबके सामने है। यदि कुछ पंक्तियाँ भी आपको अच्छी लगीं, तो हम अपना श्रम सार्थक समझेंगे।

इस संग्रह के प्रकाशन के लिए आदरणीय भूपाल सूद जी को भी साधुवाद देना चाहेंगे क्योंकि यह इनके प्रोत्साहन का ही प्रतिफल है।

- रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' और डॉ. हरदीप कौर सन्धु

रक्षा बन्धन, 13 अगस्त, 2011

समर्पण

भाव-सुमन

करते सपर्पित

यूँ अपनों को

नैनों में बसी संज्ञा,

भोर के सपनों को

साहित्य मनीषी श्रद्धास्पद

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव जी को

सादर

एवं

भावी कवयित्री सुप्रीत कौर सन्धु को

सस्नेह

अनुक्रम

◆ताँका **11-71**

1. रामेश्वर काम्बोज हिमांशु 13
2. डॉ. हरदीप कौर सन्धु 41

◆चोका **73-112**

1. रामेश्वर काम्बोज हिमांशु 75
2. डॉ. हरदीप कौर सन्धु 95

◆◆◆ ताँका ◆◆◆

दो बूँदे गिरीं

नदिया के जल में

बहती गईं

जा मिली सागर में

सागर ही बनीं दोनों।

(रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु')

ताँका / रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

1. अधरों का कम्पन

थके न काँधे
कभी बोझ से किसी
दूर आ गया,
तुम्हारे आँसुओं में
डूबा पाहन-मन।

पारदर्शी है-
तुम्हारा आचरण,
शुभ चिन्तन,
लोग देते ठोकरें
कितने हैं निर्मम!

रोया नहीं मैं
कि पथ में शूल हैं,
नहीं झिझका
कि नभ में धूल है
या है कोई चुभन।

हों नैन गीले
टिका लो माथा यह
काँधे पे मेरे
प्रतिकूल है जग
मैं करूँगा सहन।

उसी ताप से-
पिघल, मैं जी लूँगा
खारे ही सही
भर ओक पी लूँगा
करके आचमन।

पास होते जो
तुम, सब जानते
पहचानते
मैं भी रोया, मानते-
प्यार, अपनापन।

प्राण हो मेरे
न अब रोना कभी
आँसू तुम्हारे
हैं सागर पे भारी
घुमड़ते ये घन।

बहा जो नीर
कह गया था पीर
मैं था अधीर
बींध गया था मन
अधरों का कम्पन ।

लो पोंछ आँखें
गर्म जल में जग
जाएगा जल
ऐसा चढ़ेगा ज्वार
डोलें धरा -गगन ।

मोती ये तेरे
इनको खोना नहीं
यूँ रोना नहीं
लोग चाहते नहीं-
खिले कोई चमन ।

बच्चे -सा मन
छप-छप करता
भिगो देता है
बिखराकर छींटे
बीती हुई यादों के। ❑

2. झील का जल

बाँस का बन
चिर्-चिर् करता रहा
डूबता मन
ढक देते हैं शिला
सुग्रीव जैसे जन।

झील का जल
रातभर उन्मन
तट निर्जन
उगा न आज चाँद
किनसे बातें करें!

हो गई भोर
सूरज पुजारी-सा
आया नहाने
झील है पुलकित
मिलन के बहाने।

बोला कोकिल
तरु की डाल पर,
लाज तिरती
झुरमुटों के पाखी
चुहुलबाजी करें

हुए सिन्दूरी
लहरों के भी छोर
तल-अतल
वे नयन निर्मल
झील के पल-पल। ❑

3. शूलों का बिछौना

शक की कीलें
बहुत ही गहरी
क्या कर लोगे?
मरा हुआ विश्वास
कहाँ से लाके दोगे?

अपनी मौत
कुछ मरते नहीं
डरते नहीं,
मिथ्या आरोप धरे
वे अपनों से मरे।

नाले का पानी
पीकरके जनता
नारे लगाती
हम हुए आज़ाद
यह जश्न मनाती।

आरोप मढ़ो
करो प्यार की आशा
तुमसे सीखे
दूरी नहीं घटती
चुभते नश्तर से

कसा इतना
कि जीवन वीणा का
तार न टूटे
तुम समझी ढीला
कसा कि टूट गया

ख़ंज़र देखो
उतरा है गहरे
घायल मन
अहसास न तुम्हें
पीर हुई कितनी !

प्यार गुनाह
तुम्हें चाहूँ गुनाह
केसी दुनिया!
माँगा न कभी कुछ
ये गुनाह हो गया ?

बातें भी नहीं
न मुलाक़ात हुई
यही जीवन
नफ़रत ढोना है
शूलों का बिछौना है

बोकर काँटे
करते रहे तुम
आशा फूलों की
खेती की थी भूलों की
बाड़ उगी शूलों की। ❑

4. प्यार की सौगात

लेखनी मिली
ये प्यार की सौगात
दुआ में उठे
प्यार से भरे हाथ-
अपने रहें साथ।

मेरी बहना
कहने को है छोटी
बड़ा गहना
हीरे मोती मन में
शब्दों के कानन में।

जिसे था सोचा-
छोटी-सी किरन है,
वो थी चाँदनी
बराबर न मेरे
थी बड़ी हाथ भर।

माथा था चाँद
नयन भरे ताल
सुधा-मुस्कान
मन और सुन्दर
मलयानिल जैसा।

नेह अतल
शिशु जैसी सरल
वाणी निश्छल
संझा-बाती अमल
नीर-सी छल-छल।

उठे हैं हाथ
मेरी दुआएँ साथ
ऊँचा हो माथ
पथ बने सरल
खिले मन-कमल।

छू लो शिखर
चलो आठों पहर
होके निडर
बाट जोहते रहें
उजालों के नगर।

लेंगे जनम
मिलना है ज़रूरी
साधें अधूरी
मान दिया जिसने
उसको पा लेना है।

स्वार्थ की डोर
कोई न बँधता
इसके छोर
हित ही सोचे मन
तभी जुड़े बन्धन।

भूलें भी कैसे
मन पे लिखी बातें
सच्ची सौगातें
दुनियावी मेले में
हमें अपने मिले।

जलते दिये
मन्दिर की देहरी
जैसे नयन
झाँको भीतर देखो
गंगा जैसे पावन।

दूर बहुत
फिर भी निकट हूँ
तेरी खुशबू
भरी हुई जिसमें,
वही सुधा-घट हूँ।

ज़िन्दा रहता
दिल में तुम्हारे ही
रिश्तों की डोरी
धड़कन बनके
तेरा दर्पन बनके।

बिजली देखी
हँसी जब बिखरी
और निखरी
प्राण हथेली लिये
लपटों में उतरी।

प्रार्थनारत
प्यारी बेटी के लिए
जलाना प्रभु
खुशियों के ही दिये
उसके द्वारे पर।

झूले की पेंगे
अम्बर को छू लेंती
खुशबू-भरा
जीवन-रस-भीगा
लहराता आँचल।

सन्देसा लाया
जी-भर लहराया
रुका पवन
छुपा है आँचल में
छू लेने को पल में।

रह-रहके
गीतों में दर्द घुला
आया छनके
सुधियों को छूकर
जादू-मंत्र बनके।

पावन मन -
होता बहुत ऊँचा
गिरिवर से
मन्दिर-शिखर से
आरती के स्वर से।

घुमड़ी घटा
रिमझिम बरसी
सातों ही दिन
जब मिलके बैठे
याद आए अपने।

जो चाहे ले लो
चाहे प्राणों से खेलो
होंठों की हँसी
सदा फूल-सी खिले
संग तेरा जो मिले।

सन्देसे भीगे
प्रिया तक आने में
करता भी क्या
मेघदूत बेचारा
पढ़ करके रोया।

कोमल मन
होगी सदा चुभन
बात चुभे या
पग में चुभें कीलें
मिलके आँसू पी लें।

तू दीप नहीं
धरती भी नहीं तू
तू सूरज है
अँधियारे मन का
प्यारा उजियारा है।

मुझे मिला
मिले हैं सब सुख
रब ने दिया
इतना सब कुछ
और क्या मैं माँगूँगा ?

दिल को लगे
और अधिक जिएँ
अमृत पिएँ
रब ने दिया ज़्यादा
लिया बहुत कम। ❑

5. आँसू की बोली

आँसू की बोली
कब कुछ कहती
बिन बोले ही
ताप से पिघलती
मोम बन ढलती।

किसका वश
आँसू जब छलकें
बेबस होतीं
ये व्याकुल पलकें
धारा बन ढुलके।

मौन रहना
है आँखों का गहना
मुसकाकर
सारे दर्द सहना
कुछ भी न कहना।

दु:ख सहके
छुपके पिये आँसू
सच समझो
उम्र जी लिये आँसू
जख़्म सी लिये सारे।

द्वार तुम्हारे
कितनी बार आया!
कहना जो था
कभी कह न पाया
चुप्पी सह न पाया।

तूफ़ान लाखों
थे अरमान लाखों
चूर हो गए
कुछ कर न पाए
जिये- मर न पाए।

पथ में मिले
बहुत से काफ़िले
साथ में हम
कुछ दूर थे चले
तुमको पा न सके।

मेरे दर्द में
तुम्हारे आँसू बहे
ये क्या हो गया -
ज्यों ही तुमने छुआ
दर्द गुम हो गया।

मिली न छाया
था मन भरमाया
धूप बहुत
यह बैरागी मन
था जीवन का धन।

भूलें भी कैसे
वे दुर्लभ-से पल
मन विह्वल
रोके न रुक पाएँ
आँसू वे अविरल।

भीगे अन्तर
बारिश में निकलो
रोना जीभर
कोई नहीं जानेगा
आँसू बहे या पानी।

सुबकी लेना
शीतल बौछारों में
चैन मिलेगा
साथी नहीं जानेंगे
गम कितना भारी।

बरसे मेघा
रिमझिम सुर में
साथ न कोई
सन्नाटे में टपकें
सुधियाँ अन्तर में।

कोई न आए
इस आँधी-पानी में
भीगीं हवाएँ
हो गई हैं बोझिल
सन्देसा न ढो पाएँ। ❑

6. सबको गले लगा

धूप कोसते
बन्धु क्यों है चलना
सच होता है
ये उगना-ढलना
सबको गले लगा।

तन का ताप
सर्प-सा लहराया
फिर भी रहा
मेरा मन शीतल
सरिता छल-छल।

छूटे थे मीत
डूबे थे उदासी में
सारे ही गीत
आकर चुपके से
तुमने सँभाला था।

'गए, जाने दो'-
तुमने ही कहा था
'आ गए हम
ये हाथ न छोड़ेंगे
यूँ साथ न छोड़ेंगे।'

ये धूप-छाँव
जीवन की निशानी
आँसू-हँसी भी
सबकी है कहानी
सच-आँखों का पानी।

आशा के दीप
फैलाएँगे उजाला
भाव-नदी में
डूबेंगे तो तैरेंगे
ले आएँगे मोती भी।

सूरज ढला तो
चन्दा से निकलेंगे
अँधियारों की
दुनिया बदलेंगे
बच्चों-सा मचलेंगे।

पाई हमने
ज्योति तेरे नैनों से
पथ चमका
नेह के उजाले में
गीत ज्यों निर्जन में।

नहीं टूटती
प्रतिबन्धों से डोरी
खुलते द्वार
मधुर सम्बन्धों के
नेह-अनुबन्धों के।

साँकल होगी
जितनी मज़बूत
उतना भारी
संकल्प किया जाता
द्वार टूट ही जाते। ❑

7. दो घूँट पानी

चिड़िया पूछे-
कहाँ है दाना-पानी?
बड़ी हैरानी
फिर मैं कैसे गाऊँ?
आकर तुम्हें जगाऊँ

चिड़िया पूछे-
बता पेड़ क्यों काटे?
घर था मेरा
अधिकार क्या तेरा
मर्यादा सब खोई।

काटे हैं वन
धरती का जीवन
सिमट गया
नदिया भूखी-रूखी
लगती विकराल।

नीड़ है खाली
झुलसे तरुवर
बरसी आग
पसरा है सन्नाटा
विषधर ने काटा।

दो घूँट पानी
चुटकी भर दाने
दे दो मुझको
आ जाऊँगी मैं नित
हर भोर में गाने।

जगे गगन
खिलता है आँगन
ज्यों उपवन
पंछी गीत सुनाएँ
आरती बन जाए।

बिखरी रेत
चिड़िया है नहाए
मेघ भी देखे
चिड़िया यूँ माँगे है
सबके लिए पानी।

बूँदों का झूला
बादल ने है बाँधा
भीगी धरती
छमछम पायल
बजती बरखा की।

बिजली हँसी
घनकेश बिखेरे
झपकीं आँखें
हुई विभोर धरा
पात नहाए धुले।

बैठ झरोखे
गौरैया ये निहारे
कितना पानी!
नीड़ गिरा आँधी से
खो गए कहीं बच्चे।

घाटी नहाए
झमाझम वर्षा में
टप्-टप् टिप के
साज बजाते पत्ते
सन्नाटा टूट गया। ❑

नभ से गिरी
पत्तों पर फिसली
चंचल बच्ची-
वर्षा की नन्हीं बूँदे
टप-टप बजती

नन्हीं फुहारें
उड़ती धुआँ बन
आ धमकती
देख खुली खिड़की
माथे को भिगो जातीं।

शैतानी करें
हवा के कन्धों पर
चढ़ीं ये बूँदें
पैर हैं लटकाए
द्वार भड़भड़ाए

टिन की छत
तड़तड़ गोली-सी
बूँदें पड़तीं
दौंगड़ा भाग गया
दो पल लड़कर।

तपता माथा
धरती का ज्वर से
बादल ने आ
गीली पट्टी रख दी
शीतल हुई काया।

मेंढक रागी
गुण गाते रब के-
'तू मेरा दाता
भर ताल-तलैया
दिया सबको पानी।'

बीज थे सोए
पी अँजुरी जल की
खुले पपोटे
धरती से निकले
झपकी थीं पलकें।

शिखरों पर
ऊँचे पर्वत चढ़
भेड़ों के बच्चे
या मेघ कुदकते
कभी भरें चौकड़ी।

भरके लाए
सुराही-बावड़ी
वर्षा रानी ये
पोखर के प्यालों से
पिला प्यास बुझाए।

चोर -सी आईं
फुहारें दबे पाँव
न की आवाज़
परदे भिगो गईं
फिर वहीं सो गईं। ❑

❑❑

ताँका / डॉ. हरदीप कौर सन्धु

1. मेरे ईश्वर

मेरे ईश्वर
तुम्हीं पथदर्शक
शक्ति दो हमें
हों प्रेरित तुम से
आलोकित पथ हो।

2. अहसास के रिश्ते

तुम पारस
तेरी एक छुअन
मैं बनी सोना
अनमोल खज़ाना
नहीं चाहती खोना।

हँसी-खुशी में
जो तुझे याद आए
यूँ समझ लो
उसे करते प्यार
तुम खुद से ज्यादा।

दुःख-दर्द में
जो तुझे याद आए
यूँ समझ लो
वह करता प्यार
तुम्हें हद से ज्यादा।

ओ मेरी माँ
लेकर तेरा नाम
चढ़ी खुमारी
जैसे जब मैं सुनूँ
सुबह गुरबानी!

दर्द हो कोई
यूँ मुँह से निकले
हाय मेरी माँ
कहते ऐसा लगा
मिली दर्द की दवा!

कुछ रिश्ते हैं
जिनका कोई नाम
होता ही नहीं
सिर्फ़ है अहसास
वही प्यार का रिश्ता।

मिला न कोई
दिल का राज़दार
कह न पाई
कभी दिल की बात
बढ़ता गया भार।

ममता मिले
पकवान पकते
माँ की रसोई
महकता आँगन
मीठी-सी खुशबू से।

भूलें भी कैसे
खुशियों के वो पल,
साथ जो तेरे
हँसकर बिताए,
हर दिन रुलाएँ।

भीगी पलकें
टप-टप टपके
मन के आँसू
ये दर्द में तिरता
दिल बहुत रोया।

दिल चुए क्या
न जाने कब कैसे
भीगा तकिया
मन के आँगन में
दर्द जब बरसा।

कसमे वादे
टूटते हर-दिन
करो न वादा
होती हैं हमेशा ही
कोशिशें कामयाब!

मैं हूँ कविता
दिल की चुप्पी से हूँ
जनम लेती
मुस्कराती बनाऊँ
पराये को अपना।

टूट जाएगा
दिल यह तुम्हारा
रिश्तों की दूरी
मन की गहराई
तू नाप न पाएगा।

कुछ करना
अगर तुम चाहो,
दे दो रिश्तों को
कुछ वक़्त उधार
लो मूँद दरारों को।

सीख लिया ये
जिस दिन हमने
बिना हिसाब
निभाना हर रिश्ता
जग सुन्दर होगा।

देखकर यूँ
किसी की मजबूरी
हँस न देना
करो रब से दुआ -
ये दिन आएँ नहीं।

माँ करे याद
बैठी अकेली आज
सपना चूर
बुढ़ापे का सहारा
बेटा जो गया दूर।

जो विकलांग,
नहीं होते जिनके
ये दो-दो हाथ,
किस्मत की रेखाएँ
होती हैं उनकी भी।

तन सतह
आत्मा है गहराई
आत्मा में जियो
बनाकर अपना
दिल रैन-बसेरा।

गूँजा मधुर
लगा आठों पहर
गीत-संगीत
जब खेलने लगी
आँगन में बिटिया।

झूठ नहीं ये
ओ प्रीतम बेवफ़ा
बोलते आँसू
तोड़कर संयम
सिर्फ एक ही भाषा।

आँसू में होतीं
सागर से गहरी
संवेदनाएँ
पावनता इनकी
डूबकर ही जानूँ।

आँखे हैं तेरी
सागर से गहरी
डूब न जाऊँ
न कोई पतवार
तुम लगाओ पार।

बचपन की
नन्हीं-नन्हीं सी-बातें
बड़ी खुशियाँ
तुतली-फरियादें
अब बड़ा सताएँ।

प्यार की बातें
जर्जर खंडहर
बनी हैं आज
फिर से बनाने का
विकल्प नहीं ढूँढ़ा।

कब के बैठे
ख्वाहिशों के पाखी तो
मन-आँगन
कपट-जाल ने न
होने दिया बसेरा।

रोटी पकाए
तवे पर जो देखा-
चाँद उतरा,
इस चाँद के बिना
न कभी पेट भरा।

नारी है दया,
शक्ति और हौसला
क्यों जो वही तो
सुखद जीवन का
दिखाती है वो रास्ता।

ऊँचे ये रिश्ते
है भारतीय नारी
आई निभाती
करती है विश्वास
वो प्यार बेशुमार।

आँसू तुम्हारे
याद बन बहते
यूँ खोना नहीं
ये बन गए मोती
बहुत अनमोल!

दोष लगाया
चुपचाप है सहा
तुमने जो भी
मेरा दिल तेरे ही
दिल में है समाया।

सुर-संगीत
जब नहीं रहेगा
रह जाएगा
एक वो सिसकता
आँसुओं का कारवाँ।

सूने सपने
दिल तुझे पुकारे
मैं हूँ उदास
यूँ नज़रों से दूर
तेरे दिल के पास।

दिल है प्यासा
तुम्हारे ही प्यार को
बरसो तुम
आज बनकर यूँ
सावन की घटाएँ।

जीवन होता
हर दिन परीक्षा
उमर भर
रहती ये प्रतीक्षा–
परिणाम क्या होगा?

लम्बा सफ़र
पाँव थके हैं मेरे
कोई न साथ
बन हमसफ़र
तुम थाम लो हाथ! ❑

3. गाँव वो मेरा

दूर है गाँव
बहुत याद आए
लौट के आ जा
हर दिन लगता
वो मुझको पुकारे!

गाँव जाकर
मुझको नहीं मिला
गाँव वो मेरा
कई वर्ष पहले
था मैंने जिसे छोड़ा!

कोई न पास
बैठा यूँ उदास रे
प्यासा मटका
दो घूँट मिले पानी
ये उम्मीद लगाए!

गए वो दिन
बदल गए हम
बाण की खाट
न जाने कब कहाँ
अब हो गई गुम!

गर्मी जो आए
घुँघरू वाली पंखी
अम्मा बनाए
छन-छन घुँघरू
गर्मी दूर भगाए!

तोड़ उपले
दादी हारे में डाले
आग सुलगे
उर्द की डाल पके
बहुत धीरे-धीरे !

मुन्ना जो गिरा
आई थी चोट उसे
लगा वो रोने
'चींटी का आटा गिरा'-
कह माँ पुचकारे!

बच्चे जो बोले-
न करो बँटवारा
आँगन छोटा
न दीवार बनाओ
बोलो वो कहाँ खेलें!

शादी के दिन
विवाह वाले घर
जोड़ दो खाट
स्पीकर था लगता
फिर गाना बजता!

बादल छाए
सुनी जो मेघ-ध्वनि
अम्मा न रुके
चूल्हे-हारे सँभाल
उपले सब ढके!

जब-जब भी
सरसों तेल लगे
नानी के बाल
यूँ चमकते जैसे
वे तार हों सोने के!

माँ के हाथों
कढ़ाई वो चादर
जब बिछाऊँ
लगता मुझे ऐसे
माँ का परस पाऊँ!

श्रावण मास
मुझे वो याद आए
माँ की रसोई
गुलगुले पकाए
खुशबू मन भाए!

आँगन सूना
चाहता फिर यहाँ
डाले तू फेरा
रे लौटकर आ जा
पुकारे गाँव तेरा!

गाँव से चली
साथ-साथ जो मेरे
धूल भी उड़ी
गाँव धूल-लिपटा
परदेस पहुँचा!

गली-गली में
यहाँ ढूँढ़ा हमने
मिली कहीं न
गाती मौज मस्तियाँ
थीं जो मेरे गाँव में। ❑

4. ज़िन्दगी - धूप का सफ़र

तपती धूप
नंगे थे नर्म पाँव
चली अकेली
ज़िन्दगी भर ढूँढ़ी
कभी मिली न छाया।

लम्बी डगर
ये धूप का सफ़र
साथ न जब
कोई हमसफ़र
चलना है मुश्किल।

उमर ढली
अशक्त बूढ़े कन्धे
सहते भार
थककर हैं चूर
मंज़िल अभी दूर।

पकी उमर
जाने है कौन भला
पके फल-सा
पेड़ से जीवन के
कब टपक पड़ूँ?

कर्म के बिना
यहाँ सुख कहाँ रे
तू ढूँढ़ रहा
दे देगा धोखा तुझे
ये सुख है छलावा।

दर्द-तकिया
सेज मिली काँटों की
ज़िन्दगी भर
ओढ़े दु:ख की चादर
सुख खोजता रहा।

देखे सपने
हुए नहीं अपने
रहे बेगाने
धोखेबाज़-बेवफ़ा
दे गए सभी धोखा।

मन भटका
उलझे विचारों का
आया तूफ़ान
शान्त-मन लहरें
लेती हैं उसे थाम।

प्यासा है मन
वो रसीली निर्झरी
तुम बहाओ
दोनों हाथ निचोड़ो
ज़िन्दगी के फल से!

मन-अम्बर
चाहे छाए उदासी
न दें बनने
उसे यहाँ मालिक
यह तो मन-दासी।

लेकर कोई
हिम्मत और शक्ति
न हुआ पैदा
विपत्तियाँ झेलते
खुद-ब-खुद आए।

भारी हो गई
ये गमों की गठरी
मुश्किल हुआ
यूँ चलते-चलते
जीवन का सफ़र।

जब होगी ये
खत्म जीवन दास्ताँ
चिड़िया फुर्र
तब रह जाएगा
एक खाली आशियाँ।

मत इतरा
देख-देख अपना
रूप सलोना
और कुछ नहीं ये
है मिट्टी का खिलौना।

होंगे ये खत्म
यूँ झगड़े झमेले
बन जाए जो
अगर ये इंसान
बस एक इंसान।

आम आदमी
रूखा एक निवाला
बाँट जो खाए
शहंशाहों का वह
शहंशा कहलाए। ❑

5. दुनिया का विधान

ओ रे मानव
तू दुनिया में आए
ले बन्द मुट्ठी
है कैसा विधान ये
मुट्ठी खोल तू जाए!

हमने किया
दुनिया की भीड़ में
रब लापता
उसे ढूँढ़ न पाए
मन्दिर व मस्जिद!

ऊँचे घरों में
हर सुख-सुविधा
उदासी छाई
खरीद नहीं पाए
कहीं से हँसी-खुशी।

रोज़ माँगता
खुद न जाना कभी
माँगूँ तो कैसे
क्यों कुछ नहीं दिया
रब हो गया बुरा।

पैरों पे मिट्टी
यूँ थप-थपाकर
बना घरौंदा
याद आया आज वो
बेफिक्री-भोलापन।

सुन्दर नारी
दर्पण निहारती
हो अहंकारी
आ जाती है उसके
वजूद में दरार।

खाली था नीड़
तिनके ये बताएँ -
बिजली गिरी
पाखी यूँ घबराए
लौटकर न आए।

हरी मन्दिर
है जो स्वर्ण मन्दिर
स्वर्ग-मन्दिर
बूँद-बूँद अमृत
बना अमृतसर।

भूखे हैं बच्चे
भोजन को तड़पें
कुछ न भाए
चाँद लगता रोटी
कहीं से मिल जाए।

भर जाता है
बड़े से बड़ा घाव
खुद-ब-खुद
समय-मरहम
करता वो इलाज। ❑

6. प्रकृति का आँगन

लेते हैं जन्म
एक ही जगह पे
फूल व काँटे
एक सोहता सीस
दूसरा दे चुभन।

लेकर फूल
तितलियों को गोद
रस पिलाता
वेध देता बेदर्द
भौरों का तन काँटा।

चंचल चाँद
खेले बादलों संग
आँख-मिचौली
मन्द-मन्द मुस्काए
बार-बार छुप जाए।

दूल्हा वसन्त
धरती ने पहना
फूल-गजरा
सज-धज निकली
ज्यों दुल्हन की डोली।

ओस की बूँद
मखमली घास पे
मोती बिखरे
पलकों से चुन ले
कहीं गिर न जाएँ!

दुल्हन रात
तारों कढ़ी चुनरी
ओढ़े यूँ बैठी ,
मंद-मंद मुस्काए
चाँद दूल्हा जो आए!

बिखरा सोना
धरती का आँचल
स्वर्णिम हुआ
धानी-सी चूनर में
सजे हैं हीरे-मोती।

पतझड़ में
बिखरे सूखे पत्ते
चुर्चुर करें
ले ही आते सन्देश
बसंती पवन का।

पतझड़ में
बिन पत्तों के पेड़
खड़े उदास
मगर यूँ न छोड़ें
वे बहारों की आस।

हुआ प्रभात
सृष्टि ले अँगड़ाई
कली मुस्काई
प्रकृति छेड़े तान
करे प्रभु का गान।

अम्बर छाईं
घनघोर घटाएँ
काले बादल
घिर-घिर घुमड़े
जमकर बरसे !

बादल छाए
चलीं तेज़ हवाएँ
बरसा पानी
भागी रे धूल रानी
यूँ घाघरा उठाए!

ओस की बूँदें
बैठ फूलों की गोद
लगता ऐसे
देखने वो निकलीं
छुपकर के रूप। ❑

7. सांदलबार*

दिखला दे माँ
मुझे सांदलबार
तू खेली जहाँ
लायलपुर उसे
कहता सारा जहाँ!

सांदलबार
कभी हल चलाया
नाना ने वहाँ
फैसलाबाद कहे
अब तो सारा जहाँ!

* 'सांदलबार' की बात करने जा रही हूँ जहाँ मेरा ननिहाल परिवार भारत - पाकिस्तान के बँटवारे से पहले रहता था । आज मै उस सांदलबार को देखने की तमन्नाओं की बेकरारी लिये यह ताँका पेश कर रही हूँ।

था कभी वहाँ
नाना का घर-बार
सांदलबार
हुआ जो बँटवारा
नहीं रहा तुम्हारा!

नानी की रूह
सांदल में बसती
गाँव-कुँए का
पीने को मीठा पानी
रही वो तरसती!

अपना रहा
ननकाना रे वहाँ
नानी की यादें
लेकर जातीं मुझे
बार-बार रे जहाँ!

देखा माँ तेरा
सपने में जो मैंने
सांदलबार
घर नाचें खुशियाँ
खिली हँसी-बहार!

दिली तमन्ना
करे यूँ बेकरार
सुन माँ मेरी
सच में दिखला दे
मुझे सांदलबार! ❑

❑❑

◆◆◆ चौका ◆◆◆

लाडो बिटिया
आई विदा की घड़ी
न आँसू बहा
तुझे जाना ही होगा
न वश मेरा
तेरा वश भी आज
चलेगा नहीं
तुम हो मन-मोती
किसी और का
छुपाकर दिल में
बरसों रखा
रौनक तू ले चली,
बाबुल कैसे
सहे तेरी जुदाई?
माँ का दिल भी
अब लगा डोलने
लगा आँसू तोलने!

(हरदीप कौर सन्धु)

चोका / रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

1. मन दर्पन

मन दर्पन
दरक गया जब,
बिखर गया
सारा सुख-जीवन।
पाती अनाम
आती है आजकल
लूटे किसने?
वे प्यारे सम्बोधन।
आदि बेनामी
नहीं कुछ भीतर,
लिये उदासी
हो रहा समापन।
कोई न जाने
वह चुप्पी का दंश,
खूब रुलाए
साँसों पर बन्धन।

सपने खोए
ज्यों गर्म तवे पर
थे आँसू बोए
किया सब तर्पण।
कहाँ कन्हैया?
गुम कहाँ बाँसुरी
भटके राधा
शापित वृन्दावन।
मजबूरी जो
हम वह भी जानें
व्याकुलता से
भरे, नयन करें
दुःख का आचमन। ❑

2. दर्पन हुआ निर्मल

भरम हुआ
यह न जाने कैसे
दरक गया
है मन का दर्पन!
धुँधले नैन
ये देख नहीं पाए
कौन पराया
कहाँ अपनापन?
मुड़के देखा-
वो पुकार थी चीन्ही
पहचाना था
प्यारा-सा सम्बोधन।
धुली उदासी
पहली बारिश में
धुल जाता ज्यों
धूल-भरा आँगन।
आँसू नैन में
भरे थे डब-डब

बढ़ी हथेली
पोंछा हर कम्पन।
थे वे अपने
जनम-जनम के
बाँधे हुए थे
रेशम-से बन्धन।
प्राण युगों से
हैं इनमें अटके
यूँ ही भटके
ये था पागलपन।
तपता माथा
हो गया शीतल
पाई छुअन
मिट गए संशय
मन की उलझन। ❑

3. गाते किनारे

भीगे नयन
तकते एकटक
हूक-सी उठी
जल छूता ही रहा।
दोनों किनारे
थे संग-संग चले
भोर से साँझ
साँझ से भोर तक।
व्याकुल मन
सागर छोर तक
मिले न कभी
वे तरसते रहे।
जल से जुड़े
तो सरसते रहे
रब से कहा-
'क्यों हमें दीं दूरियाँ?
साथ भी चले
मिली मजबूरियाँ।'

'अलग नहीं
जुड़े प्रेम जल से
सोचो तो सही-
इतना भी मिलन
किसका हुआ?
जो डूबे अहर्निश
भीगते रहे
आदि से अन्त तक
नेह नीर में
आँख भर देखना
होता न कम
ऐसी जागीर मिली
संग जो रहे
फिर भी पीर मिली
मिल न सके
यह कितना सही?
जाना तटों ने -
बहुत कुछ है मिला
चलता रहा
नेह का सिलसिला
करो न गिला
ये लहरें भिगोतीं
हँसतीं-रोतीं
इसीलिए जल को

भाते किनारे
भले मिले न सही
गीत गाते किनारे। ❑

4. लगा पहरा

संवादों पर
अभिवादन पर
सन्देशों पर
गीले आँगन पर
तनी नुकीली
बन्धन की संगीनें
वक्त ठहरा।
सब आँसू थे पीने
चुप ही रहो
कुछ न अब बोलो
लगा पहरा।
जो न कहा तुमने
सोचा भी नहीं
उसको भी सुनता
खड़ा द्वार पे
द्वारपाल बहरा।
आँखों पे पट्टी
मन में भी जाले हैं

भावों के द्वारे
जड़ दिए ताले हैं
वो कैसे जाने-
दे दिया है उसने
अनजाने में
घाव यह गहरा।
अविश्वासों की
खाई नहीं भरती
शंका की रेत
जो आँखों में तिरती
लेना ही जाने
नहीं वो अपना है
प्रेम-गली का
टूटा हुआ सपना है
मन पंछी है
फुर्र से उड़ जाता
पाश कोई हो
उसे बाँध न पाता
जीना दो पल
कुछ ऐसा कर लें
अपने सिर
भारी यह गठरी
आरोपों की धर लें। ❑

5. ये दु:ख की फ़सलें

खुद ही काटें
ये दु:ख की फ़सलें
सुख ही बाँटें
है व्याकुल धरती
बोझ बहुत
सबके सन्तापों का
सब पापों का
दिन-रात रौंदते
इसका सीना
कर दिया दूभर
इसका जीना
शोषण ठोंके रोज़
कील नुकीली
आहत पोर-पोर
आँखें हैं गीली
मद में ऐंठे बैठे
सत्ता के हाथी
हैं पैरों तले रौंदे

सच के साथी
जितनी भी राहें हैं
सब में बिछे काँटे। ❑

6. चिन्ता करना

चिन्ता करना
खुलते घोटालों की
रक्षा करना
सत्ता के दलालों की
आम आदमी
मरता मरने दो
अपराधी को
लॉकर भरने दो
भूखे तड़पें
उनका फ़िक्र नहीं
अन्न सड़ाओ
गड्ढों में भरने दो
देश है रोता
तुम कभी न रोना
लाशों को देख
धीरज नहीं खोना
भाषण देना
कुछ भी न करना

छुप जाना तू
ऊँची कुर्सी के नीचे
बैठे रहना
अपनी आँखें मीचे
सारी बाधाएँ
खुद टल जाएँगी
जनता का क्या
यूँ ही जल जाएगी
चिथड़े उड़ें
तुझको क्या डर है?
परम पापी!
तू सदा अमर है
जो सच बोले
अगवा करवा दो
गुण्डों के बल
धोखे से मरवा दो
खा लेना सब
स्वीकार नहीं लेना
डकार नहीं लेना। ❑

7. मेरे आँगन

मेरे आँगन
उतरी सोनपरी
लिये हाथ में
वह कनकछरी
अधमुँदी-सी
उसकी हैं पलकें
अधरों पर
मधु-घट छलके
पाटल पग
हैं जादू-भरे डग
मुदित मन
हो उठा सारा जग
नत काँधों पे
बिखरी हैं अलकें
वो आई तो
आँगन भी चहका
खुशबू फैली
हर कोना महका

देखे दुनिया
बाजी थी पैंजनियाँ
ठुमक चली
ज्यों नदिया में तरी
सबकी सोनपरी। ❑

8. गीली चादर

दु:ख में ओढ़ी
थे रोए अकेले में
सुख में छोड़ी
भटके थे मेले में
नहीं समेटी
सिर सदा लपेटी
अनुतापों की
भारी भरकम ये
गीली चादर।
जब मीरा ने ओढ़ी
ज़हर पिया
पर हार न मानी,
ओढ़ कबीरा
लेकर इकतारा
लगे थे गाने-
ढाई आखर प्रेम के
काटें बन्धन
किया मन चन्दन

शुभ कर्मों से,
है घट-घट वासी
वो अविनाशी
रमा कण-कण में
कहीं न ढूँढ़ो
ढूँढ़ो केवल उसे
सच्चे मन में
वो मिले न वन में
नहीं मिलता
तीरथ के जल में
कपटी जीवन में। ❑

9. मुझे बल देना

बाधाएँ खड़ीं
इम्तहान की घड़ी
बहुत बड़ी
रुकना नहीं सीखा
न झुकना ही
बढ़ते ही जाने को
जीवन माना
कोई तो साथ चले
अब क्या सोचें
अपनी गठरी ले
चल ही देना
भोर हुई मन की
कुछ न लेना
कुछ देना ही चाहो
होंगे बहुत
दो ही बोल तुम्हारे
जग को प्यारे
संग में चल देना
मुझे यूँ बल देना। ❑

10. परछाई की पीड़ा

नहीं बैठना
सटकर दो पल
जलन-भरी
मेरी परछाई से
दे देगी पीड़ा
दो पल की छुअन
जग जाएँगी
सोई सभी कथाएँ
तड़पा देंगी
जीवन की व्यथाएँ!
वो स्वर्णकेशी
परियों का नर्तन
अश्रु-चुम्बन
भावमग्न होते ही
विदा हो जाना,
फिर लौट न पाना
विवशता में
कुछ छटपटाना

गए पहर
चाँद का सुबकना
किसने जाना?
छू न पाना हथेली
वो प्यार-भरी
सहमी और डरी
लिख न पाना -
'जन्मों की अभिलाषा,
आग जगी मन की। ❑

चोका / डॉ. हरदीप कौर सन्धु

1. गुलमोहर

गुलमोहर
है राज-आभरण*
स्वर्ग-का-फूल*
फर्न जैसी पत्तियाँ
झिलमिलातीं
बड़े गुच्छों में फूल
फूलों से सजा
ये दिखता है जैसे
हो दावानल!
दहकते हैं फूल
आग के जैसे
सहते हैं जब ये
सूर्य का ताप

*संस्कृत में इसका नाम 'राज-आभरण' है, जिसका अर्थ राजसी आभूषणों से सजा हुआ वृक्ष है।
*फ्रांसीसियों ने गुलमोहर को 'स्वर्ग का फूल' नाम दिया है!)

वो फूलों का दुशाला
लाल-नारंगी
ओढ़कर सहता
भीषण गर्मी
दे आँखों को ठंडक
आए शबाब
यूँ गर्मी में निखार
पेड़ों पर बहार! ❑

2. वसंत ऋतु

आया बसंत
पुलकित हो अब
नहाई धरा
सजे दुल्हन जैसे
फूल-गहने
प्रकृति जो पहने
हँसती करे
शृंगार वो सलोना
यौवन फूटा
आँगन की बगिया
मुस्काएँ फूल
सोंधी महक उठी
घर-आँगन
इन्द्रधनुषी छटा
ये बिखराएँ
यूँ प्रकृति सँवारे
अनुपम सौंदर्य! ❑

3. जीवन-रेत

यह जीवन
एक रेत की मुठ्ठी
रेत के जैसे
पल-पल फिसले
कभी बनता
यह एक पहेली
सुख-दुःख की
अनबूझ सहेली
बने कभी ये
दिल की एक प्यास
मरुस्थल में
ये जल की तलाश
कभी टूटता
ये तरु की तरह
गिरता जाए
एक-एक जो पत्ता
जीवन घटे
है किसी भी पल का

नहीं भरोसा
एक पल जीवन
मौत दूसरे पल! ❑

4. जीवन-छाया

यह जीवन
तो पल दो पल का
है एक साया
यहाँ धूप-छाँव का
कभी इसका
लगे रूप-कुरूप
दुःख जो आएँ
उतरे जो आँगन
परी-खुशियाँ
हर पल जीवन
सुख की बस्ती
मिली दुःख की नदी
हुए निराश
तैरना नहीं सीखा
रब को कोसा
जब मन-आँगन
खिला फूल-सा
याद न रहा खुदा

क्यों न समझें
हमको ये जीवन
नहीं मिलता
पग-पग छाया ही
कहीं कभी एक-सा! ❑

5. तेरी ख्वाहिश

हम दोनों तो
नदी के किनारे दो
जीवन भर
एक-संग तो चले
मिल न सके
थी फिर भी मगर
उम्मीद एक
गिरे जो समन्दर
कभी ये नदी
मिट दोनों किनारे
एक हो चले
हम दोनों में कुछ
एक-सा लगे
मेरे दु:ख जैसा ही
कभी तू लगे
रौशनी-सी बिखरे
हँसती जो मैं
ये तू क्या जाने भला

रगों में मेरी
मेरा खून जो बहे
ख्वाहिश तेरी
ये दोनों किनारे तो
शायद मिलें
कभी ख्वाबों तक में
प्यार की दोस्ती
यहाँ रहेगी सदा
हम मिलें न मिलें ! ❑

6. रब की चिता

तरल मन
पलकों से टपके
टप से अश्रु
मैंने पूछा मन से-
क्या बीता पल
तुझे याद है आया?
दिल धड़का
चुपके आँचल में
दर्द छुपाया
अँखियों से बहता
यूँ चला गया
मैं समझ गई कि
आज फिर से
कोई कोख है सूली
चढ़ाई गई
कोख बेटी की कब्र
बनाई गई
रब की आज फिर
चिता जलाई गई! ❑

7. अपना घर

वो छोटी-सी थी
माँ-बाप कहते थे -
बेटी यूँ कर
यूँ मत करना तू
तुझे है जाना
कभी अपने घर,
बड़ी जो हुई
अब शादी हो गई
वो घर छोड़
इस घर आ गई
अजनबी-सा
यह घर-आँगन
तन मन से
अपना बनाकर
गले लगाया
लेकिन अब कभी
हो जाए कोई
ज़रा-सी ऊँच-नीच

बात बात पे
पति ने धमकाया -
बाँध सामान
अब जल्दी अपना
जा चली जा तू
इसी एक पल में
अपने घर!
रब से उसे मिले
ये दो-दो घर
उसका अपना तो
कोई भी नहीं
कभी हुआ मगर
तुझ पे छोड़ा
अब यह फैसला
रब्बा तू बता
अब अपना घर
उसका है कौन सा ? ❑

8. पिता का रुतबा

कलम- स्याही
बार-बार करती
माँ का ही ज़िक्र
हर पन्ना सजाए
पिता की बात
भला क्यों नहीं होती
ये तो बताए
ममता की मूरत
माँ प्रेम-देवी
माने जहान सारा
बिन पिता के
घर-परिवार का
कहाँ गुज़ारा
पकड़कर हाथ
नन्हे-मुन्नों का
चलना वो सिखाए
पिता का जूता
बेटे को जब आए

मित्र बेटे का
खुद वो बन जाए
पहली रोटी
जब बेटी पकाए
चाहे हो कच्ची
पिता को वो लगती
पकवानों से
बहुत ज़्यादा अच्छी
पिता का नाम
जीवन-पुस्तक के
पन्ने-पन्ने पे
जगमगाता रहे
कौन है जो ले
बच्चों के जीवन में
पिता का वो रुतबा! ❑

9. कौन चाहेगा?

कौन चाहेगा
मन को कभी रुलाना
इन आँखों में
आँसुओं को बसाना
दर्द देता है
जब यह ज़माना
बन जाती हैं
तब ये डरी आँखें
दर्द से भरे
आँसुओं का ठिकाना
भीगी अँखियाँ
छल-छल छलकीं
जग छलावा
ये अब देखने के
काबिल हुईं
इन आँखों में कभी
आँसू न लाना
जीने न देगा यहाँ

तुझे ज़माना
कोई पोंछे न पोंछे
आज ये आँसू
तो कोई गम नहीं
आज के बाद
देखोगे साफ़-साफ़
यह ज़माना
कभी भी न तिरेंगे
आँखों में आँसू
ये तरल नयन
बनेंगे अब
हिम्मत का ठिकाना
देखेगा ये ज़माना ! ❑

10. रब जैसी माँ

सब जगह
रब नहीं पहुँचा
तो बनाई माँ
न आरती न पूजा
माँ से पहले
कोई नाम न दूजा
माँ दुनिया का
तीर्थ सबसे बड़ा
दिल से सोचे
जब कुछ कहती
पारदर्शी माँ
चेहरा पढ़कर
बात वो जाने
छुपे नहीं छुपाए
अन्तर्यामी माँ
एक जीती जागती
प्रेम-दीप-सी
मूरत होती है माँ

माँ की दुआएँ
यूँ सदा ही रहेंगी
सिर पे छाँव
नहीं देखा रब को
फिर क्या हुआ
रब माँ में दिखता
रब जैसी होती माँ! ❑

❑❑❑

यह सुखद है कि हिन्दी जगत में 'हाइकु' के पूर्णत: प्रतिष्ठित एवं समादृत होने के पश्चात् अब जापान की अन्य काव्य शैलियों- ताँका, चोका, हाइगा की ओर रुझान बढ़ रहा है।

डॉ. हरदीप कौर सन्धु एक ख्यात हाइकुकार हैं और नवीन प्रयोगों में रुचि रखती हैं। प्रस्तुत संग्रह 'मिले किनारे' में उनके एक सौ ताँका और ग्यारह चोका कविताएँ संगृहीत हैं। 'ताँका' में उन्होंने ग्राम्य जीवन और लोक संस्कृति के ऐसे अनूठे चित्र उकेरे हैं, जिन्होंने उनकी कविता को एक नई ताज़गी प्रदान की है। आंचलिक शब्दों के प्रयोग ने कविता में अपूर्व माधुर्य एवं विश्वसनीयता भर दी है। उनकी रचनाओं में रिश्तों की पावन महक- विशेष रूप से माँ के प्रति लगाव दर्शनीय है! डॉ. सन्धु के ताँका आर्जव, माधुर्य एवं लालित्य से भरपूर हैं।

चोका कविताओं में तारतम्य और नैरन्तर्य बना रहता है, जो चोका का विशेष गुण है, साथ ही आन्तरिक लय भी है। 'गुलमोहर', 'वसन्त ऋतु', 'तेरी ख़्वाहिश', 'रब की चिता', 'अपना घर' और 'रब जैसी माँ' शीर्षक चोका कविताएँ विशेष मोहक बन पड़ी हैं।

- डॉ. सुधा गुप्ता

पवित्रा एकादशी, 9 अगस्त, 2011

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

जन्म : 19 मार्च, 1949; हरिपुर, जिला- सहारनपुर (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.ए., हिन्दी (मेरठ विश्वविद्यालय), बी.एड.।

प्रकाशित रचनाएँ : 'माटी, पानी और हवा', अँजुरी भर आसीस, कुकड़ूँ कूँ, हुआ सवेरा, (कविता-संग्रह), मेरे सात जनम (हाइकु-संग्रह), धरती के आँसू, दीपा, दूसरा सवेरा (लघु उपन्यास), असभ्य नगर (लघुकथा- संग्रह), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य-संग्रह), भाषा-चन्द्रिका (व्याकरण), फुलिया और मुनिया (बालकथा), अनेक लघुकथाएँ अनूदित। 17 सम्पादित संग्रह।

सम्पर्क : 37, बी/2, सैक्टर-17, रोहिणी, नई दिल्ली-110089

ई-मेल : rdkamboj@gmail.com

मोबाइल : 9313727493

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

जन्म : 17 मई 1969 को बरनाला (पंजाब) में।

शिक्षा : बी. एससी, बी.एड., एम.एससी.(वनस्पति विज्ञान) एम. फ़िल., पीएच.डी.।

सम्प्रति : कई वर्ष पंजाब के एस.डी. कॉलेज में अध्यापन (बॉटनी लेक्चरार), अब सिडनी (आस्ट्रेलिया) में अध्यापन।

कार्यक्षेत्र : ♦हिंदी व पंजाबी में नियमित लेखन। अनेक रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। हिन्दी की अंतर्जाल पत्रिका अनुभूति, रचनाकार, पंजाब स्क्रीन, गवाक्ष, सहज साहित्य एवं परिकल्पना ब्लॉगोत्सव में कविताएँ, पुस्तक समीक्षा, कहानी, हाइकु, ताँका तथा चोका प्रकाशित। ♦पंजाबी की अंतर्जाल पत्रिका पंजाबी माँ, लफ़्ज़ों का पुल, लिखतम, शब्द साँझ, पंजाबी मिन्नी, पंजाबी हाइकु, पंजाब स्क्रीन एवं साँझा पंजाब में कविता, कहानी, हाइकु तथा ताँका प्रकाशित। वस्त्र-परिधान, विज्ञापन की दुनिया, अविराम त्रैमासिक आदि पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। 'कुछ ऐसा हो' और 'चन्दनमन' संग्रह में हाइकु प्रकाशित। ♦वेब पर हिन्दी हाइकु, पंजाबी वेहड़ा, शब्दों का उजाला और देस परदेस चिट्ठे का सम्पादन।